● समुद्र तट...

लक्षद्वीप...

लक्षद्वीप, भारत का एक खूबसूरत द्वीप समूह, अपनी प्राकृतिक सुंदरता और साफ समुद्र तटों के लिए मशहूर है। अगर आप लक्षद्वीप घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो इन पांच खास जगहों को जरूर देखें। इन जगहों की खूबसूरती इतनी अद्भुत है कि आपको विदेश भी फीका लगेगा। इन पांच जगहों को अपनी लिस्ट में शामिल करें और अपनी ट्रिप को यादगार बनाएं।

▶ **अगत्ती द्वीप**-अगत्ती एक खूबसूरत द्वीप है लक्षद्वीप में। इस द्वीप का समुद्र बहुत सुंदर है। पानी इतना साफ है कि नीला दिखता है। किनारे पर सफेद रेत है जो बहुत सुंदर लगती है। यहां आप मजेदार चीजें कर सकते हैं। अगर आप तैरना जानते हैं, तो पानी के अंदर जाकर रंग-बिरंगी मछलियां देख सकते हैं। इसे स्नॉर्कलिंग कहते हैं।

▶ **बंगारम द्वीप**- बंगारम एक शांत और सुंदर द्वीप है यहां बहुत कम लोग आते हैं, इसलिए यह बिल्कुल शांत है। प्रकृति यहां बहुत खूबसूरत है। इस द्वीप पर सूरज उगते और डूबते वक्त का नजारा बहुत प्यारा होता है। सुबह जब सूरज निकलता है, तो आसमान रंग-बिरंगा हो जाता है। शाम को सूरज डूबते वक्त लाल-नारंगी रंग छा जाता है। यहां आकर आप अपनी सारी थकान भूल जाएंगें।

▶ **कवरत्ती द्वीप**-कवरत्ती लक्षद्वीप का सबसे बड़ा शहर है। यह लक्षद्वीप की राजधानी भी है। यहां के समुद्र किनारे बहुत सुंदर हैं। आप यहां समुद्र में नहा सकते हैं और रेत पर खेल सकते हैं। कवरत्ती में एक समुद्री संग्रहालय है जहां आप समुद्र की चीजें देख सकते हैं। यहां पानी में खेलने वाले कई खेल भी हैं। यह जगह इतनी सुंदर है कि आपको लगेगा जैसे आप किसी विदेशी जगह पर हैं।

▶ **मिनिकॉय द्वीप**- मिनिकॉय लक्षद्वीप का दूसरा सबसे बड़ा टापू है। यहां एक बड़ा लाइटहाउस है जो बहुत पुराना और सुंदर है। इस टापू पर लोग खास तरह की नावें बनाते हैं जो देखने लायक हैं। समुद्र का किनारा यहां बहुत साफ है। पानी इतना साफ है कि आप नीचे तक देख सकते हैं। रेत भी बहुत सफेद और मुलायम है। यहां घूमना और तैरना बहुत मजेदार होता है।

▶ **कालपेनी द्वीप**-कालपेनी द्वीप अपनी सुंदर लैगून के लिए मशहूर है। यहां आप पानी के खेल और स्कूबा डाइविंग का मजा ले सकते हैं। यह द्वीप प्राकृतिक सुंदरता से भरा हुआ है और यहां का नजारा बहुत ही आकर्षक है।

● मध्य प्रदेश...

तवा डैम...

मध्य प्रदेश का नर्मदापुरम जिसे कुछ सालों पहले तक होशंगाबाद के नाम से जाना जाता था। इसी होशंगाबाद जिले में एक छोटा सा कस्बा है जिसे 'तवा' कहते हैं। ये कस्बा 1978 में बांध के बनने के बाद पर्यटकों की नजर में आया। तवा डैम मध्य प्रदेश की प्रमुख और पवित्र नर्मदा नदी की सहायक तवा नदी पर बना है।

तवा डैम का आर्थिक महत्व ये है कि यहां पर मध्य प्रदेश जलविद्युत की सबसे बड़ी परियोजना चल रही है। इसके अलावा इस डैम का पानी आस-पास के इलाकों में खेती की सिंचाई के लिए बड़ी मात्रा में उपयोग में लाया जा रहा है। जिससे इस पूरे इलाके में भरपूर फसल की पैदावार हो रही है. इसके अलावा इस डैम का पानी आस-पास के शहरों में पीने के लिए भी सप्लाई किया जाता है।

प्राकृतिक पर्यटकों के घूमने के लिए, तवा जैसी सुंदर जगह भारत में बहुत कम ही देखने को मिलती है। इस जगह को पर्यटकों के स्वर्ग का दर्जा दिया गया है। यहां सतपुड़ा पहाड़ों के बीच बने तवा बांध का जलाशय आकर्षक और पूरी तरह से प्राकृतिक है। इस बांध की तस्वीर एक कल्पना को साकार करती हुई दिखाई देती है. जिसमें आसपास पहाड़ हैं, बीच में पानी की बड़ी सी झील दिखाई देती है और उसमें चलती बड़ी-बड़ी नाव।

सुबह-शाम के वक्त झील के किनारे ठंडी हवाओं के साथ थोड़ा घूमने-फिरने से जिंदगी तनाव मुक्त सी हो जाती है. मध्य प्रदेश सरकार के पर्यटन विभाग ने यहां आने वाले पर्यटकों के लिए पानी के बीचों-बीच जाकर पहाड़ों की प्राकृतिक सुंदरता को निहारने और कैमरे में कैद करने के लिए बैकवाटर क्रूज का इंतजाम किया हुआ है। तवा के पास ही जंगली जानवरों को देखने के लिए सतपुड़ा नेशनल पार्क है, जिसमें कई जंगली जानवरों को देखा जा सकता है। इसके अलावा जंगल में कैंपिंग करने के शौकीन पर्यटकों के लिए कई ट्रैकिंग और कैंपिंग साइट भी हैं।

तवा घूमने का मजा मानसून के मौसम में है जब हल्की-हल्की फुहारें हों। इस दौरान जंगल में चारों ओर हरियाली होती है बीच-बीच में छोटे-छोटे पानी के झरने बह रहे होते हैं, जबकि अक्टूबर-मार्च का मौसम सूखा और ठंडा रहता है। वहीं अप्रैल से जून तक मौसम गर्म, सूखा और झुलसाने वाला रहता है। तवा में आने वाले पर्यटकों को रुकने के लिए कई गेस्ट हाउस मिल जाते हैं साथ ही खाने के होटल भी काफी हैं। तवा नगर सड़क मार्ग से मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 100 किमी और नागपुर से लगभग 250 किमी की दूरी पर स्थित है। भोपाल देश-प्रदेश के सभी शहरों से सड़क, रेल और हवाई मार्ग से सीधे जुड़ा हुआ है. तवा के पास का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन मध्य प्रदेश का इटारसी जंक्शन है जो तवा से सिर्फ 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तो इस साल के मानसून का लुत्फ सतपुड़ा की पहाड़ियों के बीच तवा झील के किनारे बिताएं और यहां के खूबसूरत नगरों के साथ ही खुशगवार मौसम का भी लुत्फ उठाएं।

दक्षिण भारत का ठंडा हिल स्टेशन कुर्ग

कर्नाटक के हिल स्टेशन की बात चले तो कुर्ग से खूबसूरत जगह कोई दूसरी नहीं हैं। कुर्ग पश्चिमी घाट के पहाड़ों में मौजूद है जहां प्राकृतिक नजारों में शामिल है ऊंचे-नीचे पहाड़ों की

बनावट, पहाड़ों के बीच में मौजूद हरे घने जंगल, दूध की तरह दिखने वाले झरने, नदियां, गुफाएं, मंदिर, किले और ऐतिहासिक संग्रहालय। कुर्ग आने वाले पर्यटकों के लिए मनोरंजन के बहुत सारे विकल्प हैं...

सह्याद्री पर्वत जिसे पश्चिमी घाट की पहाड़ी शृंखला भी कहा जाता है, जो दक्षिण भारत के तमिलनाडु से शुरू होती है और गुजरात में आकर समाप्त होती है। इन पश्चिम घाट के पहाड़ों में हर प्रदेश में एक से बढ़ कर एक पर्यटक स्थल हैं। इस कड़ी में हम बात करेंगे कर्नाटक के खूबसूरत पर्यटक स्थल 'कुर्ग' के बारे में। देश भर में अपने प्राकृतिक नजारों के लिए प्रसिद्ध कुर्ग में पर्यटकों के देखने के लिए बहुत सारी जगहें मौजूद हैं।

कर्नाटक के हिल स्टेशन की बात चले तो कुर्ग से खूबसूरत जगह कोई दूसरी नहीं हैं। कुर्ग पश्चिमी घाट के पहाड़ों में मौजूद है जहां प्राकृतिक नजारों में शामिल है ऊंचे-नीचे पहाड़ों की बनावट, पहाड़ों के बीच में मौजूद हरे घने जंगल, दूध की तरह दिखने वाले झरने, नदियां, गुफाएं, मंदिर, किले और ऐतिहासिक संग्रहालय। कुर्ग आने वाले पर्यटकों के लिए मनोरंजन के बहुत सारे विकल्प हैं।

वनस्पतियों और जीवों को यहां मौजूद तीन वाइल्ड लाइफ सेंचुरी में देखा जा सकता है। इसमें ब्रह्मगिरी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, तालाकावेरी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, पुष्पगिरी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी के अलावा राजीव गांधी नेशनल पार्क भी है। इसके अलावा पूरे कुर्ग में सुंदर प्राकृतिक स्थल और ऐतिहासिक महत्व के स्थल मौजूद हैं, जिनमें राजा सीट, मदिकेरी का किला, ओंकारेश्वर का मंदिर, गड्डुगे, एबे वाटर फॉल, दुबारे का एलिफेंट कैंप, बाइलाकुप्पे की तिब्बत नगर, स्वर्ण मंदिर, तालाकावेरी, मुख्य है।

● **दक्षिण का कश्मीर**- कुर्ग को भारत का दूसरा कश्मीर कहना गलत नहीं होगा। यहां की खूबसूरती की वजह से यह जगह पूरे साल देशी-विदेशी पर्यटकों से भरी रहती है। पहाड़ी और जंगली इलाका होने की वजह से पूरे साल कुर्ग में दिन का औसत तापमान 20-25 डिग्री बना रहता है वहीं रात का न्यूनतम तापमान 7-8 डिग्री के बीच बना रहता है। जो पर्यटक यहां की प्रकृति के बीच सिर्फ ऐतिहासिक स्थलों को देखना चाहते हैं उनके लिए अक्तूबर से जून तक का मौसम अच्छा रहता है जबकि जो पर्यटक हरियाली के बीच एकांत में कुछ समय गुजारना चाहते हैं उनके लिए मानसून का मौसम सबसे बढ़िया माना जाता है। कुर्ग में पर्यटकों के देखने के लिए जो मशहूर दर्शनीय स्थल हैं उनकी लिस्ट लंबी है।

● एबी फॉल्स चिकलिहोल जलाशय दुबारे हाथी शिविर हरंगी बांध, होन्नामना केरे झील ओंकारेश्वर मंदिर कोटेबेट्टा ट्रेक/पीक मदिकेरी किला मल्लल्ली फॉल्स मंडलपट्टी ट्रेक नलकनाद अरामने पैलेस नेहरू मंडप पडी इग्गुटप्पा मंदिर राजा की सीट सोमवारपेट सुन्तिकोप्पा तडियांडामोल ट्रेक तालकावेरी मंदिर और झरने येम्मेमादु की दरगाह शरीफ कराडा गांव राजा की समाधि

● **सड़क मार्ग :** कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु से लगभग 260 किमी की दूरी पर है कुर्ग जहां तक पहुंचने में लगभग 5 घंटे समय लगता है। राष्ट्रीय मार्ग एनएच-275 बहुत बढ़िया बना हुआ है। इस मार्ग से बेंगलुरु से कुर्ग तक आसानी से प्राकृतिक नजारों को देखते हुए पहुंचा जा सकता है। वहीं कुर्ग की हैदराबाद से दूरी लगभग 819 किमी है जिसे लगभग 12 घंटे में पूरा किया जा सकता है। चेन्नई से कुर्ग की दूरी लगभग 600 किमी है, जो लगभग 10 घंटे पूरी की जा सकती है। कर्नाटक में सड़कें अच्छी हैं, खासकर हाईवे का हाल काफी अच्छा है इसलिए सड़क से आने में परेशानी नहीं होती है। कर्नाटक के सभी बड़े शहरों से कुर्ग के लिए राज्य परिवहन निगम की बसें चलती हैं जिससे कम पैसों में आसानी से कुर्ग तक पहुंचा जा सकता है।

● **रेल मार्ग :** कुर्ग तक पहुंचने के लिए सबसे नजदीक का रेलवे स्टेशन मैसूर रेलवे स्टेशन है जो कि कुर्ग से लगभग 100 किमी की दूरी पर स्थित है और जिसे लगभग 2 घंटे में पूरा करके कुर्ग पहुंचा जा सकता है। वहीं मैसूर के लिए देश के लगभग सभी शहरों से सीधे ट्रेन आती है इसलिए कुर्ग आने के लिए सबसे आसान और नजदीक का रेलवे स्टेशन मैसूर ही है।

● **हवाई मार्ग :** कुर्ग पहुंचने के लिए सबसे नजदीक का एयरपोर्ट मंगलुरु इंटरनेशनल एयरपोर्ट है जिसकी दूरी कुर्ग से लगभग 140 किमी है जिसे लगभग 3 घंटे में टैक्सी या कैब से पूरा करके कुर्ग पहुंचा जा सकता है।

■ **साभार : अबप**

● दंतेवाड़ा...

फुलपाड़ ...

दंतेवाड़ा का नाम नारी शक्ति की अवतार देवी मां दंतेश्वरी के नाम पर पड़ा था। जिसका इतिहास जानने और समझने के लिए दंतेवाड़ा का सफर जरूरी हो जाता है। यहां पर पर्यटकों के देखने के लिए सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक और दार्शनिक तौर पर बहुत से स्थल मौजूद हैं। फुलपाड़ का खूबसूरत झरना शहर से लगभग 40 कि.मी. की दूरी पर प्रकृति की गोद में मौजूद है। इस झरने को देखने के लिए कच्चे रास्तों और चट्टानों पर से गुजरकर जाना होता है। पर्यटक अगर ग्रुप में हों तो ये रास्ता हंसते हुए पार हो जाता है। वहीं रास्ते में आदिवासी समाज के लोग भी पर्यटकों का स्वागत दिल खोल कर करते हैं। इस दौरान पर्यटकों को आदिवासी संस्कृति और उनके रहन-सहन, खान-पान की अच्छी जानकारी मिल जाती है।

● भीगे कपड़े ...

■ बारिश के मौसम में कपड़े जल्दी सूख नहीं पाते हैं। ऐसे में जल्दबाजी में अक्सर लोग गीले कपड़े ही पहन लेते हैं। गीले कपड़े लंबे समय तक पहने रहने से स्किन संबंधित समस्याएं होने का खतरा बढ़ जाता है। वहीं अगर आप गीले अंडर गार्मेंट्स पहन लेते हैं तो इससे आपको इंफेक्शन का खतरा भी बढ़ जाता है। गीले होने की वजह से शरीर का प्राकृतिक तापमान ठंडा हो जाता है, जिस वजह से लोगों को बुखार, सर्दी- जुकाम इस मौसम में ज्यादा होने का डर रहता है। बारिश के मौसम में सर्दी-जुकाम जैसे संक्रमण काफी आसानी से फैलता है। इसलिए गीले कपड़ों को तुरंत बदल लेना चाहिए।